परमात्म ऊर्जा

अभी वायुमण्डल व वातावरण देख कहाँ-कहाँ अपनी रूपरेखा बदल देते हो। इसलिए सफलता कब कैसे, कब कैसे दिखाई देती है। जबकि कलियुग अंत की आत्माएं अपनी सत्यता को प्रसिद्ध करने के लिए निर्भय होकर स्टेज पर आती हैं तो पुरूषोत्तम संगमयुगी सर्वश्रेष्ठ आत्माएं अपने को सत्य प्रसिद्ध करने में वायुमण्डल प्रमाण रूपरेखा क्यों बनाती हैं? आप मास्टर रचयिता हो ना! वह सभी रचना हैं ना! रचना को मास्टर रचयिता कैसे देखेंगे? जब मास्टर रचता के रूप में स्थित होकर देखेंगे तो फिर यह सभी कौन-सा खेल दिखाई देगा? कौन-सा दृश्य देखेंगे? जब बारिश होती है तो बारिश के बाद कौन-सा दृश्य देखते हैं? मेंढ़क थोड़े से पानी में महसूस ऐसे करते हैं जैसे सागर में हैं। ट्रां-ट्रां... करते नाचते रहते हैं। लेकिन है वह अल्पकाल सुख का पानी। तो यह मेंढ़कों की ट्रां-ट्रां करने और नाचने-कूदने का दृश्य दिखाई देगा, ऐसे महसूस करेंगे कि यह अभी-अभी अल्पकाल के सुख में फूलते हुए गये कि गये। तो मास्टर रचयिता की स्टेज पर ठहरने से ऐसा दृश्य दिखाई देगा। कोई सार नहीं दिखाई देगा। बिगर अर्थ बोल दिखाई देंगे। तो सत्यता को प्रसिद्ध करने की हिम्मत और उल्लास आता है? सत्य को प्रसिद्ध करने का उमंग आता है कि अभी समय पड़ा है? क्या अभी सत्य को प्रसिद्ध करने में समय पड़ा है? फलक भी हो और झलक भी हो। ऐसी फलक हो जो महसूस करें कि सत्य के सामने हम सभी के अल्पकाल के यह आडम्बर चल नहीं सकेंगे। जैसे स्टेज पर ड्रामा दिखाते हैं ना! कैसे विकार विदाई ले हाथ जोड़ते, सिर झुकाते हुए जाते हैं! यह ड्रामा प्रैक्टिकल विश्व की स्टेज पर दिखाना है। अब यह ड्रामा की स्टेज पर करने वाला ड्रामा, बेहद के स्टेज पर लाओ। इसको कहा जाता है सर्विस। ऐसे सर्विसएबुल विजयी माला के विशेष मणके बनते हैं। तो ऐसे सर्विसएबुल बनना पड़े। अभी तो यह प्रैक्टिस कर रहे हैं। पहले प्रैक्टिस की जाती है तो छोटे-छोटे शिकार किए जाते हैं, फिर होता है शेर का शिकार। लास्ट प्रैक्टिकल पार्ट हू-ब-हू ऐसे देखेंगे जैसे यह छोटा ड्रामा। तब एक तरफ जयजयकार और एक तरफ हाहाकार होगी। दोनों एक ही स्टेज पर।

बरबीघा-शेखपुरा(बिहार)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित शिव संदेश शोभा यात्रा में बी.डी.ओ. भरत कुमार, ब्र.कु. पिंकी बहन, ब्र.कु. बबीता बहन सहित अनेक भाई-बहनें शामिल रहे।

कथा सरिता

सोच का फर्क...

एक बार एक लड़का एक खिलौने बेचने वाले के पास खड़ा था। उसी वक्त वहाँ से एक कार आकर रूकती है। उस कार में से एक आदमी निकलता है। वो आदमी देखता है कि वो खिलौने बेचने वाला निराश था और उसे लगता है कि उसको खिलौने खरीदने चाहिए। वो आदमी खिलौने खरीदता है और वापिस अपनी कार में बैठ जाता है।

कार में बैठने के बाद उसे वो लड़का दिखाई देता है जो खिलौने बेचने वाले के पास खड़ा था। वो आदमी देखता है कि वो लड़का उसकी कार की ओर गौर से देख रहा था।

वो आदमी कार से बाहर निकलता है और फिर उस लड़के को पूछता है कि क्या तुम इस कार में बैठना पसंद करोगे? वो लड़का जल्दी से हाँ बोलता है और फिर कार में बैठ जाता है।

कार में बैठने के बाद वो आदमी उस लड़के से पूछता है कि क्या तुम्हें मेरी कार बहुत पसंद आयी? लड़का बोलता है हाँ। फिर वो आदमी उस लड़के से पूछता है कि क्या तुम मेरे साथ इस कार में आगे तक चलोगे? वो लड़का कहता है, जी ज़रूर।

वो दोनों कार में साथ जा रहे थे तभी उस आदमी ने उस लड़के को कहा कि मुझे ये कार मेरे बड़े भाई ने गिफ्ट की थी। वो लड़का मुस्कुराता है।

अब वो आदमी उस लड़के को कहता है कि मुझे पता है कि तुम इस वक्त क्या सोच रहे हो। वो लड़का कहता है बताइये मैं क्या सोच रहा हूँ? वो आदमी कहता है कि तुम यही सोच रहे हो कि काश मेरा भी कोई बड़ा भाई ऐसा अमीर होता तो अच्छा होता।

तभी वो लड़का कहता है कि गलत, मैं वैसा नहीं सोच रहा हूँ। वो आदमी उसे पूछता है तो फिर तुम इस वक्त क्या सोच रहे हो? वो लड़का बोलता है कि मैं ये सोच रहा हूँ कि काश मैं एक अमीर आदमी होता जो अपने छोटे भाई को कार गिफ्ट करता। ये बात सुनकर वो आदमी सुन्न हो जाता है।

शिक्षा : इससे ये सीख मिलती है कि हमें हमेशा बड़ा ही सोचना चाहिए।

बदलने की शुरुआत स्वयं से करें...

एक दिन दादा जी घर में उदास बैठे थे। दादा जी को उदास बैठे देखकर बच्चे ने पूछ ही लिया कि क्या बात है दादा जी आप इतने उदास क्यों हो?

दादा जी ने कहा बेटा कुछ नहीं बस यूँही अपनी ज़िंदगी के बारे में सोच रहा था। बच्चे ने कहा दादा जी मुझे भी बताओ अपनी ज़िंदगी के बारे में।

दादा जी थोड़ी देर सोचते रहे और फिर उन्होंने कहा कि जब मैं छोटा था तब मेरे ऊपर किसी भी प्रकार की ज़िम्मेदारियां नहीं थी और मेरी कल्पनाओं की भी कोई सीमा नहीं थी। मैं तब दुनिया बदलने के बारे में सोच रहा था।

जब मैं थोड़ा बड़ा हुआ तब मेरे में पहले से ज़्यादा बुद्धि बढ़ गयी थी और उसके साथ ही मेरी सोच भी बदलने लगी थी। मैं सोचने लगा कि दुनिया बदलना तो बहुत मुश्किल है। इसलिए मैंने मेरे लक्ष्य को थोड़ा छोटा कर दिया और मैंने ये सोचा कि मैं दुनिया नहीं बल्कि सिर्फ अपने देश को बदलूँगा।

मैं थोड़ा और बड़ा हुआ और समय भी बीता तब मुझे अपने देश को बदलना भी मुश्किल लग रहा था। मैंने सोचा कि देश में बदलाव लाना कोई मामूली बात नहीं है और मैंने अपना लक्ष्य और भी छोटा कर दिया।

मैंने अब तय किया कि मैं सिर्फ अपने परिवार और करीबी लोगों को बदलूंगा। पर समय बीतता चला गया और अफसोस मैं वो भी नहीं कर पाया।

अब तो मैं सिर्फ इस दुनिया में कुछ ही दिनों का मेहमान रहा हूँ। आज मुझे ये एहसास होता है कि अगर मैंने केवल खुद को बदलने का सोचा होता तो मैं ऐसा ज़रूर कर पाता और शायद मुझे देखकर मेरा परिवार भी बदल जाता और उनसे प्रेरणा लेकर देश भी बदल जाता और तब शायद मैं इस दुनिया को भी बदल पाता।

इतना बोलते-बोलते दादा जी की आँखें नम हो जाती हैं और वो अंत में बच्चे से बोले कि तुम बेटा ऐसी गलती मत करना। तुम कुछ और बदलने से पहले स्वयं अपने आप को बदलना। अगर तुम अपने आप को बदलोगे तो दुनिया अपने आप बदल जाएगी।

वैसे तो हम सभी में दुनिया बदलने की ताकत होती है पर उसकी शुरुआत खुद से ही करनी होती है। अगर हमें दुनिया में बदलाव देखना है तो हमें सबसे पहले अपने आप को ही बदलना होगा। हमें अपने आप को और भी बेहतर बनाना होगा और अपने रवैये को सकारात्मक बनाना होगा।

जो चीज़ हम दूसरों में बदलाव चाहते हैं वो हमें पहले खुद अपने आप में बदलनी होगी। हम तभी दूसरों को बदलने में कामयाब रहेंगे।